अदम्य

नई चेतना, नए स्वर – मासिक अंक | मई 2026

अदम्य

अदम्य पत्रिका के आगामी अंक के लिए रचनाएँ आमंत्रित हैं।

रचनाएँ भेजने के लिए दिशा-निर्देश:-

1. रचनाएँ मौलिक एवं अप्रकाशित होनी चाहिए।
2. रचनाएँ देवनागरी लिपि (यूनिकोड) में टाइप करके वर्ड डॉक्यूमेंट में ही भेजें।
3. रचनाकार अपनी न्यूनतम 1 और अधिकतम 5 रचनाएँ ही भेजें। 5 से अधिक रचना भेजने पर रचनाएँ अमान्य हो जाएंगी।
4. रचनाएँ केवल गूगल फॉर्म द्वारा ही भेजें।
5. रचनाएँ भेजने की अंतिम तिथि 15 मई 2026 है।

रचनाएँ केवल गूगल फॉर्म द्वारा ही भेजें

स्कैन करें

सर्वाधिकार सुरक्षित
अदम्य पत्रिका @2025-26

संपादक - विशेक
सह-संपादक - आरती
प्रूफरीडर - शिखा शिप्रा
सोशल मीडिया प्रभारी - अखिलेश कुमार

•

आवरण पृष्ठ - रोशनी

•

विज्ञापन शुल्क

Full Pagen Rs. 400
Half Pagen Rs. 200
Qtr. Pagen Rs. 100
Back Cover n'Rs. 700- (four colour)
Inside Front n'Rs. 500- (four colour)
Inside Back n'Rs. 400- (four colour)

•

- पत्रिका पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक है।
- अदम्य पत्रिका में प्रकाशित लेखों में आए विचार लेखकों के निजी हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।
- अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है।
- अदम्य पत्रिका से जुड़े सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन हैं।

•

संपर्क करें

ईमेल आईडी
adamyapatrika@gmail.com

वेबसाइट
adamyapatrika.in

अनुक्रम

संपादकीय

छपने की भूख और सृजन की तृष्णा — विशेक (4)

शोध आलेख

क्या पढ़ने में चूक को गलतियाँ कहना जायज़ है? — डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता (7)

कविता

सुमन! तू क्यों...? — रामानुज चौरसिया (12)

कहानी

लालची — डॉ. मोहम्मद इसरार (13)

लघु कथा

स्क्रीन की रोशनी और भीतर का अँधेरा — क्षितिजा झा (20)

पुस्तक समीक्षा

प्यारी सहर: डाकखाने से लौटी चिट्ठियाँ — पुष्पेंद्र सिंह (22)

नाटक समीक्षा

आषाढ़ का एक दिन — सुमन कुमार (24)

क्लासिक गोल्डमाइन

टू द लाइटहाउस — वर्जीनिया वुल्फ (अदम्य चयन) (27)

संपादकीय

छपने की भूख और सृजन की तृष्णा

विशेक

संपादक, अदम्य पत्रिका

> “यदि सृजन केवल इस उद्देश्य से किया जाए कि वह प्रकाशित हो, तो वह अपने भीतर की सच्चाई खो देता है। वह एक प्रक्रिया का हिस्सा बन जाता है, जिसमें गति तो होती है पर गहराई नहीं होती।”

अदम्य पत्रिका

"छपने की भूख और सृजन की तृष्णा" यह केवल एक वाक्य नहीं है, बल्कि वर्तमान साहित्यिक परिदृश्य की एक गंभीर स्थिति की ओर संकेत करता है। इस विषय पर विचार करने से पहले यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि यहाँ सृजन का आशय केवल लेखन से है। सृजन शब्द अपने भीतर अनेक अर्थों को समेटे हुए है, परंतु इस संदर्भ में हम उसे लेखन तक सीमित रखकर ही समझना चाहेंगे, ताकि विचार की दिशा भटके नहीं और अर्थ का अनर्थ न हो।

यह सर्वविदित है कि छपने और छापने की प्रक्रिया का एक लंबा इतिहास रहा है। मानव ने जब से अपने अनुभवों, विचारों और ज्ञान को स्थायी रूप देने का प्रयास किया, तब से लेखन और उसके प्रकाशन की प्रक्रिया विकसित होती चली गई। प्रारंभ में यह केवल संरक्षण का माध्यम था। विचारों को सुरक्षित रखना, उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना और ज्ञान की निरंतरता बनाए रखना ही इसका उद्देश्य था। उस समय छपना किसी प्रकार की भूख नहीं, बल्कि एक आवश्यकता थी। सृजन पहले था, और छपना उसके बाद की स्वाभाविक परिणति।

यदि हम इस प्रक्रिया को ध्यान से देखें तो स्पष्ट होता है कि सृजन और छपना दो अलग-अलग स्तरों पर घटित होने वाली क्रियाएं हैं। सृजन आंतरिक है, वह मन, अनुभव और संवेदना से उपजता है। इसके विपरीत छपना बाह्य है, वह उस सृजन को समाज तक पहुंचाने का माध्यम है। स्वाभाविक रूप